पात्र परिचय

(प्रवेशानुसार)

कुँवर उदयसिंह : चित्तौड़ के स्वर्गीय महाराणा साँगा का सबसे छोटा पुत्र राज्य का उत्तराधिकारी। आयु 14 वर्ष।

पन्ना (धाय माँ) : एक त्यागमयी वीरागंना। कुँवर उदयसिंह का संरक्षण करने वाली धाय माँ। आयु 30 वर्ष।

सोना : रावल सरूपसिंह की लड़की। अत्यन्त रूपवती और नटखट। आयु 16 वर्ष।

चन्दन : धाय माँ का पुत्र साहस और स्नेह का प्रतीक । आयु 13 वर्ष।

सामली : अन्तःपुर की परिचारिका। आयु 28 वर्ष।

कीरत : जूठी पत्तल उठाने वाला बारी। आयु 40 वर्ष।

बनवीर : महाराणा साँगा के भाई पृथ्वीराज का दासी पुत्र। क्रूर और विलासी। आयु 32 वर्ष।

समय : रात्रि का दूसरा प्रहर।

स्थान : कुँवर उदयसिंह का कक्ष।

रंग निर्देश : पूरी सजावट है। दरवाजों पर रेशमी परदे पड़े हैं। एक पार्श्व में उदयसिंह की शय्या है। सिरहाने पन्ना (धाय माँ) के बैठने का स्थान।

(नेपथ्य में नारियों की सम्मिलित नृत्य ध्वनि। मृदंग और कडखकी रमक। फिर नारियों का सम्मिलित कण्ठ से गान)

कंकड़ बंधन रण चढण, पुत्र बधाई चाव।
तीन दिहाड़ा त्याग रा, काँई रंक काँई राव।।
काँई रंक काँई राव।
काँई रंक काँई राव।।

(फिर नृत्य की ध्वनि)

धरा जाता धर्म पलटतां, त्रियां पड़ता ताव।
एं तीनहु दिन मरण रा, काँई रंक काँई राव।।
काँई रंक काँई राव।
काँई रंक काँई राव।।

(यह संगीत नेपथ्य में धीरे धीरे हल्का सुनाई पड़ता है)

उदयसिंह : (दौड़ता हुआ आता है, पुकारता है) धाय माँ। धाय माँ। (कोई उत्तर नहीं मिलता है। अपने आप) धाय माँ कहाँ है। (फिर पुकार कर) धाय माँ

पन्ना : (भीतर से आती हुई) क्या है कुँवर। (देखकर) अरे, साँझ हो गई, ओर तुमने अभी तक अपनी तलवार म्यान में नहीं रखी।

उदयसिंह : धाय माँ, देखो न कितनी सुन्दर–सुन्दर लडकियाँ नाच रही हैं।

गीत गाती हुई तुलजा भवानी के सामने नाच रही हैं। चलो न। देखो न।

पन्ना : मैं नहीं देख सकूँगी, लाल।

उदयसिंह : नहीं धाय माँ, चलो न। थोड़ी देर के लिए चलो न।

पन्ना : नहीं कुँवर इस समय नाच देखना अच्छा नहीं लगता।

उदयसिंह : क्यों नहीं अच्छा लगता। मैं तो उन्हें बड़ी देर तक देखता रहा और वे भी मुझे बड़ी देर तक देखती रही, धाय माँ। मैं कितना अच्छा हूँ, धाय माँ।

पन्ना : बहुत अच्छे हो। तुम तो चित्तौड़ के सूरज हो। महाराणा साँगा जी के छोटे कुँवर। सूरज की तरह तुम्हारा नाम कुँवर उदयसिंह रखा गया है।

उदयसिंह : (हँसकर) अच्छा । यह बात है। पर क्या रात में भी सूरज का उदय होता है।

मैं तो रात में भी हँसता–खेलता रहता हूँ।

पन्ना : दिन में तो तुम चित्तौड़ के सूरज हो, कुँवर। रात में तुम राजवंश के दीपक हो। महाराणा साँगा के कुल–दीपक।

उदयसिंह : कुल दीपक। कहीं तुम मुझे दान न कर देना धाय माँ। वे नाचने वाली लड़कियाँ तुलजा भवानी की पूजा में दीप दान करके ही नाच रही है। वे दीपक छोटे से कुण्ड में कैसे नाचते है, धाय माँ (मचले हुए स्वर में) चलो न, धाय माँ। तुम उनका दीपदान देख लो । जिस तरह उनके दीपक नाचते हैं, उसी तरह वे भी नाच रही हैं ।

पन्ना : मैं इस समय कुछ नहीं देखूँगी कुँवर ।

उदयसिंह : (रुककर) तो जाओ, मैं भी नहीं देखूँगा । मैं उदय सिंह भी नहीं बनूँगा और कुल दीपक भी नहीं कुछ नहीं बनूँगा ।

पन्ना : रूठ गये कुँवर, रूठने से राजवंश नहीं चलते, जाओ। विश्राम करो। देखो तुम्हारे कपड़ों पर धूल छा रही है। दिनभर तुम तलवार का खेल खेलते रहे, थक गए होंगे। जाओ शैया पर सो जाओ । मैं तुम्हारी तलवार अलग रख दूँगी।

उदयसिंह : (रूठे हुए स्वर में) तब तो मैं तलवार के साथ ही सोऊँगा।

पन्ना : अभी वह समय नहीं आया कुँवर । चित्तौड़ की रक्षा में तुम्हें कई दिनों तक तलवार के साथ ही सोना पड़ेगा।

उदयसिंह : (रूठे हुए स्वर में) तुम्हें तलवार से डर लगता है जो बार–बार तलवार रखने की कहती हो।

पन्ना : तलवार से डर! चित्तौड़ में तलवार से कोई नहीं डरता।

कुँवर! जैसे लता में फूल खिलते हैं न, वैसे ही यहाँ वीरों के हाथों में तलवार खिलती है, तलवार चमकती हैं।

उदयसिंह : (उसी तरह रूखे स्वर में) अब मेरा मन बहलाने लगी। तुम नाच देखने नहीं चलतीं, तो मैं ही अकेला चला जाऊँगा। मैं जाता हूँ।

(जाने को उद्यत होता है)

पन्ना : नहीं कुँवर, तुम कभी रात में अकेले नहीं जाओगे। चारों तरफ जहरीले सर्प घूम रहे हैं, किसी समय भी तुम्हें डस सकते हैं।

उदयसिंह : सर्प । कैसे सर्प ?

पन्ना : तुम नहीं समझोगे, कुँवर। जाकर सो जाओ। थक गये होंगे। भोजन के लिए मैं मना लूँगी।

उदयसिंह : नहीं माँ, आज न मैं भोजन करूँगा और न ही अपनी शय्या पर ही सोऊँगा।

(प्रस्थान के लिए उद्यत उदयसिंह का प्रस्थान)

पन्ना : चले गये, कुँवर का रूठना भी मुझे अच्छा लगता है। मना लूँगी नाच, गान, दीपदान। इसी से चित्तौड़ की रक्षा होगी। चित्तौड़ में यह बहुत हो चुका। बहुत हो चुका। और अब तो बनवीर का राज है।

(नूपुरनाद करते हुए एक किशोरी का प्रवेश)

किशोरी : धाय माँ को प्रणाम।

पन्ना : कौन ?

किशोरी : मैं हूँ सोना। रावल सरूपसिंह की लड़की। कुँवर जी कहाँ है ?

पन्ना : वे थक गये हैं, वे सोना चाहते हैं।

सोना : सोना चाहते हैं। तो मैं भी तो सोना हूँ। (अट्टहास)

पन्ना : चुप रह सोना। कुँवर जी रूठ कर सोने चले गए हैं। तुम लोग कुँवर को नाच–गाने की ओर खींचना चाहती हो।

सोना : क्या, तुलजा भवानी के सामने नाचना कोई बुरी बात है ?

आज हम लोगों ने दीपदान किया और मन भर कर नाचा। यों (नाचती है) कुँवर जी भी तो बड़ी देर तक हमारा नाच देखते रहे। मैं भी तो उन्हें देखकर बहुत नाची। उनको हमारा नाच बहुत अच्छा लगा। बहुत अच्छा। देखो, पैरों की यह ताल (नूपुर की झनकार)

पन्ना : बस–बस सोना। अगर तू रावल जी की बेटी न होती तो..................

सोना : कटार भौंक देती। कटार।। (अट्टहास करती है) धाय माँ तुमने उदयसिंह के सामने तो अपने पुत्र चन्दन को भी भुला दिया। तुम्हारे मातृत्व को भी भुला दिया। तुम्हारे मातृत्व में उदयसिंह ऐसे समाये है, जैसे कटार को अपने हृदय में रखने के लिए म्यान ने अपना हृदय खोखला कर दिया हो। (हँसती है) खोखला ।

पन्ना : यह कविता रहने दो। जानती नहीं बनवीर का राज है।

सोना : ओहो, बनवीर उन्हें श्री महाराजा बनवीर कहो। बागड़ के तो इलाके से वे हाथी–घोड़ों की झूल लाये थे....................हाँ झूल। इतनी बड़ी । हमारे लिए भी तो वे एक रेशम की झूल लाये थे। उसे सिर से ओढ़कर नाचने से ऐसा लगता था जैसे मकड़ी के जाले के आर–पार चन्द्रमा की किरण थिरक रही है। हाँ...................... ।

पन्ना : बहुत नाचती हो ? बनवीर की तुम पर बड़ी कृपा है।

सोना : द्रौपदी के चीर की तरह। आज प्रातःकाल उन्होंने मुझे बुलाया और कहा .... धाय माँ ....। तुम बुरा तो नहीं मानोगी।

पन्ना : मैं क्यों बुरा मानूँगी ?

सोना : उन्होंने कहा, महल में धाय माँ अरावली पहाड़ बनकर बैठ गई है। अरावली पहाड़ (हँसती है) तो तुम लोग बनास नदी बन कर बहो न। खूब नाचो, गाओ। यों आज कोई उत्सव का दिन नहीं था, फिर भी उन्होंने कहा मेरे बनवाये मयूर पक्ष कुंड में दीपदान करो। मालूम हो, जैसे भव सागर मे आत्माएँ तैर रही हों, या जैसे मेघ पानी–पानी हो गये हो और बिजलियाँ टुकड़े–टुकड़े हो गई हों।

पन्ना : बड़ी उमंग में हो आज ?

सोना : दीपकों के साथ उमगें भी लौ देने लगी है, धाय माँ । सारा जीवन ही एक दीपावली का त्योहार बन गया है।

पन्ना : तो यही त्योहार मना रही हो तुम ?

सोना : मैं ही क्या, सारे नगरनिवासी यह त्योहार मना रहे हैं.......................... नहीं मान रही हो, तो तुम। धाय माँ, तुम, पहाड़ बनने से क्या होगा ? राजमहल पर बोझ बन कर रह जाओगी, बोझ। और नदी बनो तो तुम्हारा बहता हुआ बोझ, पत्थर भी अपने सिर पर धारण करेंगे, पत्थर भी। आनन्द और मंगल तुम्हारे होंगे, जीवन का प्रवाह होगा, उमंगों की लहरें होंगी, जो उठने में गीत गायेगी, गिरने से नाच नाचेंगी। गीत और नाच, धाय माँ। गीत और नाच। जैसे सुख और सुहाग एक साथ हँस रहा हो और जब दीपदान का दीपक अपने मस्तक पर लेकर चलोगी, धाय माँ, तो ज्ञात होगा, धाय माँ, जैसे शुक्र तारे को मस्तक पर रखकर उषा आ रही है।

पन्ना : बनवीर के अनुग्रह ने तुम्हें पागल बना दिया है, सोना।

सोना : धाय माँ, पागल कौन नहीं है ? महाराणा अपने सात हजार पहलवानों के साथ पागल हैं। मल्लक्रीड़ा ही तो उनका पागलपन है। महाराज बनवीर, महाराणा विक्रमादित्य की आत्मीयता से पागल हैं । वे विक्रमादित्य के अन्तःपुर में प्रलाप करते हैं, यह आनन्द ही उनका पागलपन है। सारा नगर आज के त्योहार में पागल है। तुम कुँवर उदयसिंह के स्नेह में पागल हो और मैं (हँसकर) मेरी कुछ न पूछो, धाय माँ ? मैं तो इन सब के पागलपन से पागल हूँ, तुम चाहे जो कहो। हाँ तो कुँवर उदयसिंह कहाँ है ?

पन्ना : कुँवर उदयसिंह को छोड़ो, सोना। वे बहुत थक गये हैं। अब सो रहे होंगे। तुम जाओ। यहाँ कही तुम्हारा पागलपन कम न हो जाय।

सोना : मेरा पागलपन ? धाय माँ, पागलपन कहीं कम होता है ? पहाड़ बढ़कर कभी छोटे हुए हैं ? नदियाँ आगे बढ़कर कभी लौटी हैं ? फूल खिलने के बाद कभी कली बने हैं ? सब आगे बढ़ते हैं। नहीं बढ़ती हो तो सिर्फ तुम। सदा एक सी। तुम्हारा पागलपन भी सदा एक–सा।

मैं रावल की बेटी हूँ, शायद सामन्त की बेटी बनूँ, शायद महाराज की बेटी बनूँ। कुछ बढ़कर ही बनूँगी और तुम धाय माँ सिर्फ धाय माँ ही रहोगी।

पन्ना : सोना, मुझे किसी से ईर्ष्या नहीं है। मैं जैसी हूँ अच्छा है। राज सेवा में जीवन जा रहा है– यही मेरे भाग्य की बात है।

सोना : भाग्य तो सब का होता है, धाय माँ। ये नूपुर मेरे पैरों में पड़े हैं तो इनका भी भाग्य है। मेरे पैरों की गति में गीत गाते हैं, तो यह भी इनका भाग्य है। मेरे आगमन का संदेश पहले ही पहुँचा देते हैं और जब मेरे पैर रूक जाते हैं तो ये मौन हो जाते हैं, तो यह भी इनका भाग्य है। भाग्य तो सबके होता है, धाय माँ। तुम नगर के उत्सव में भाग नहीं ले रही हो, न लो। महाराज बनवीर का साथ नहीं दे रही हो, न दो, मैं कौन होती हूँ बीच में बोलने वाली।

पन्ना : तो क्या मेरे उत्सव में जाने और न जाने का सम्बन्ध बनवीर की इच्छा से है ?

सोना : फूल कुछ कहता है ? अपनी सुगन्ध भेज देता है। दीपक कोई संदेश भिजवाता है ? पंतगे आप–से–आप आ जाते हैं।

पन्ना : मैं जानती हूँ इस दीपक की आग में मैं जल जाऊँगी।

सोना : तो कुँवर को भेज देती। उनको तो कोई आग न छू सकती ?

पन्ना : कैसे भेज देती ? इतने आदमियों के बीच उन्हें कैसे भेज देती ?

महाराज साँगा के वंश के एक वही तो उजाले हैं। महाराज रतन सिंह तीन ही वर्ष राज करके सूर्यलोक को चले गए, विक्रमादित्य भी बनवीर की कूटनीति से अधिक दिनों तक ....।

सोना : धाय माँ, तुम विद्रोह की बातें करती हो।

पन्ना : आँधी में आग की लपट तेज ही होती है, सोना। तुम भी उसी आँधी में लड़खड़ाकर गिरोगी। तुम्हारे ये सारे नूपुर बिखर जायेंगे। न जाने किस हवा का झोंका तुम्हारे इन गीतों की लहरों को निगल जाएगा ? यह सुख और सुहाग पास–पास उठे हुए दो बुलबुलों की तरह बिना सूचना दिये फूट जाएगा। चित्तौड़ राग–रंग की भूमि नहीं है। यहाँ आग की लपटें नाचती हैं। सोना जैसी रावल की लड़कियाँ नहीं।

सोना : (क्रोध से चीखकर) धाय माँ ।

पन्ना : बनवीर की आग की कलियों। तुम्हारे पीछे काली राख है, यह मत भूल जाना। ये अतृप्त इच्छाओं की चिनगारियाँ अधजली होकर चिटकेंगी और चित्तौड़ की आँखों में किरकिरी बनकर घूमेंगी । यह आग की ज्वाला हवन कुंड को भी जला देंगी, सोना। इसे बुझा दो। तुम्हारे इस त्योहार से चित्तौड़ परिचित नहीं है। यहाँ का त्योहार आत्म बलिदान है। यहाँ का गीत मातृभूमि की वन्दना का गीत है। उसे सुनो और समझो।

सोना : (शान्त स्वर में) समझ लिया, धाय माँ।

पन्ना : तो यहाँ से जाओ। देखना इस त्योहार के पीछे कोई कूटनीति न हो। बनवीर से पूछना, इस राग–रंग का क्या अर्थ है।

सोना : वह मेरी समझ में नहीं आवेगा धाय माँ।

पन्ना : तो जाओ, दिशाओं की तरह उसकी हँसी में डूबी रहो। तुमसे प्रतिध्वनि भी न निकल सके।

(सोना का धीरे–धीरे प्रस्थान। उसके नूपुर धीरे–धीरे बजते हुए दूर तक सुन पड़ते हैं)

पन्ना : अँधेरी रात। यह राग–रंग। नगर के सब लोगों का जमाव। कुँवर उदय सिंह के लिए बुलावा। यह सब क्या है ?

(चन्दन का प्रवेश)

चन्दन : (दूर से पुकारते हुए) धाय माँ! माँ..........

पन्ना : क्या है मेरे लाल ?

चन्दन : माँ। इतनी कविता बनाने वाली, इतने गीत गाने वाली, इतना नाचने वाली सोना धीरे–धीरे कैसे जा रही थी ? गुम–सुम, जैसे किसी ने साँप का जहर खींच लिया हो।

पन्ना : साँप का जहर ?

चन्दन : हाँ जहरीली तो है ही। जब बोलती है तो बातों की ऐसी चोट करती है कि कुछ कहते ही नहीं बनता। यह तो हमेशा उछलती–कूदती जाती थी। आज तो जैसे उसके पैर में मोच आ गई हो।

पन्ना : आई थी कुँवर को बुलाने, अपना नाच दिखलाने। मैंने कुँवर को नहीं जाने दिया तो बुरा मान गई ।

चन्दन : हाँ, माँ कुछ दिनों से कुँवर हमारे साथ नहीं खेलते, इसी के यहाँ चले जाते हैं। मैं भी उनके पीछे जाता हूँ, यह कुँवर की ओर देखती हैं और कुँवर इसकी ओर देखते हैं। कहते तो कुछ नहीं, बस देखते हैं ? पता नहीं इस तरह देखने से क्या होता है ? क्या होता है माँ ?

पन्ना : कुछ नहीं, लोग देवता के दर्शन करते है न । तो उन्हें आनन्द मिलता है। मैं कुँवर से कह दूँगी कि वे भी देवता की तरफ देखा करें, सोना की तरफ नहीं।

चन्दन : तो सोना बुरा न मान जाएगी, माँ ?

पन्ना : लोगों के बुरा मानने से क्या होता है ? भगवान को बुरा नहीं मानना चाहिए। तुम तो किसी को नहीं देखते, चन्दन ?

चन्दन : देखता हूँ, माँ । पहाड़ी खरगोश को। ओह, कैसी छलांग भरता है, माँ जैसे उसमें बिजली भरी हो। पलक मारते ही पहाड़ की इस चोटी से उस चोटी पर पहुँच जाता है। पहाड़ी खरगोश से बढ़कर और कौनसी चीज है, माँ। उसे देखकर फिर किसी को देखने की इच्छा नहीं होती है।

पन्ना : पहाड़ी खरगोश का क्या कहना है, चन्दन। उसी तरह वीरों को भी धावा करना चाहिए।

चन्दन : हाँ मैं भी उतनी ही तेजी से दौड़ सकूँगा, जमीन से आसमान तक।

पन्ना : जमीन से आसमान तक कोई नहीं दौड़ता । हाँ तू नाच देखने तो नहीं गया था।

चन्दन : माँ धावा करने वाले कहीं नाच देखते हैं ? मुझे तो अच्छा नहीं लगता। हाँ कुँवर को अच्छा लगता है। कुँवर कहाँ है, माँ।

पन्ना : रूठकर सो गये थे।

चन्दन : क्यों, भोजन करने में ? उन्होंने भोजन कर लिया ?

पन्ना : नहीं ? पर कुँवर तुम्हारे उठाने से नहीं उठेंगे। तुम भोजन कर लो। मैं थोड़ी देर बाद उन्हें उठाकर, बहलाकर भोजन करा दूँगी।

चन्दन : मुझे अकेले भोजन करना अच्छा नहीं लगेगा, माँ।

पन्ना : भोजन कर लो, मेरे चन्दन । मेरे लाल। सज्जा ने तुम्हारे लिए अच्छा भोजन बनाया है। वह तुम्हें अच्छी–अच्छी बातें सुनाती हुई भोजन करा देगी। मैं भी अभी आती हूँ। तुम्हारी माला टूट गई थी, उसी को ठीक कर रही हूँ। बस, थोड़े दाने और रह गये है।

चन्दन : माँ कल कुँवर की माला भी ठीक कर देना। वह भी टूट रही है। सोना ने उसे पकड़कर खींच दिया था।

पन्ना : अच्छा चन्दन। वह भी ठीक कर दूंगी।

(चन्दन का प्रस्थान)

पन्ना : (सोचते हुए) मेरा भोला लाल। जब, पूछा कि तुम तो किसी को नहीं देखते हो तो कहता है, देखता हूँ माँ। पहाड़ी खरगोश को (पहाड़ी खरगोश को)। वाह रे! मेरे चन्दन। कहता है,

धावा करने वाले कही नाच देखते हैं। वह तो दौड़ते हैं जमीन से आसमान तक ....
जमीन से आसमान तक।

(यकायक घर की कुछ चीजों के गिरने..............की धमक। शीघ्रता से सामली....।)

सामली : (चीखकर पुकारती हुई) धाय माँ । धाय माँ ।

पन्ना : कौन, कौन सामली ?

सामली : (बिलखते हुए) धाय माँ, धाय माँ । कुँवर कहाँ है ? कुँवर जी कहाँ है ?

पन्ना : क्यों कुँवर को क्या हुआ ?

सामली : उनका जीवन संकट में है।

पन्ना : कहाँ । कैसे ? यह तुम क्या कह रही हो ?

सामली : उनका जीवन बचाओ। धाय माँ ।

पन्ना : (चीखकर) सामली । कहाँ है? कुँवर जी।

(अन्दर की तरफ भागती है)

सामली : (बिलखते हुए) "हाय । सर्वनाश हो रहा है। क्या मेवाड़ को ऐसे ही दिन देखने थे ? क्या चित्तौड़ के साके का यही फल होना था? हाय! क्या हो रहा है ? तुलजा भवानी। तुम चित्तौड़ की देवी हो। कैसे कहुँ कि तुम्हारे त्रिशूल में अब शक्ति नहीं रही। मेवाड़ का भाग्य ....।

पन्ना : (फिर प्रवेश कर) सो रहा है। मेरा कुँवर सो रहा है। कहीं तो कुछ नहीं हुआ। कुँवर जी रूठ गये थे। वे तलवार लिए भूमि पर सो गये। तलवार उनके हाथों से खिसक गई है, पर वे शान्ति से सो रहे है। मेरे कुँवर को कुछ नहीं हुआ।

सामली : कुँवर अच्छे है। तुलजा भवानी कुशल करें। पर धाय माँ। महाराणा विक्रमादित्य जी की हत्या हो गई।

पन्ना : (चीखकर) महाराणा की हत्या हो गई। किसने की ?

सामली : बनवीर ने। महाराणा सो रहे थे। उसने अवसर पाकर उनकी छाती पर तलवार भोंक दी।

पन्ना : (चीखकर) हाय!महाराणा विक्रमादित्य जी। यह मैं पहले जानती थी। (सिसकने लगती है)

सामली : बनवीर ने नगर भर में आज नाच–गान का त्योहार मनवाया जिससे नगरवासियों का ध्यान नाच–रंग में ही रहे। मौका देखकर वह राजमहल में गया। अन्तःपुर में वह आता–जाता था। किसी ने रोका नहीं। उसने महाराणा के कमरे मे जाकर उनकी हत्या कर दी। (सिसकियाँ लेने लगती है)

पन्ना : (स्थिर होकर) आज कुसमय नाच–रंग की बात सुनकर मेरे मन में शंका हुई थी। इसीलिए मैंने कुँवर को कहीं जाने से रोक दिया था। संभव था कि कुँवर वहाँ जाते और बनवीर अपने सहायकों से कोई काण्ड रच देता।

सामली : इसीलिए मैं दौड़ी आयी हूँ धाय माँ। लोगों ने बनवीर को कहते सुना है कि वह कुँवर उदयसिंह को भी सिंहासन का अधिकारी समझ कर जीवित रहने नहीं देगा। वह निष्कंटक राज्य करेगा। धाय माँ।

पन्ना : विलासी और अत्याचारी राजा कभी निष्कंटक राज नहीं करता।

सामली : लेकिन रक्त से भीगी तलवार लेकर वह सीना ताने हुए अपने महल में गया है।

पन्ना : लोगों ने उसे पकड़ा नहीं। सैनिक चुपचाप देखते ही रहे।

सामली : सैनिकों को उसने अपनी तरफ मिला लिया है। लोग उससे डरते हैं। महाराणा विक्रमादित्य का राज भी तो ऐसा नहीं था कि लोग उनसे प्रेम रखते। उनके पहलवानों की सहायता से राज नहीं चल सकता। सभी सामन्त महाराणा से असंतुष्ट थे।

पन्ना : अब क्या होगा ?

सामली : थोड़ी देर बाद ही वह कुँवर जी को मारने आयेगा। आज की रात में ही वह अपने को पूरा महाराणा बना लेना चाहता है। किसी तरह से हो कुँवर जी की रक्षा होनी चाहिए, धाय माँ।

पन्ना : कुँवर जी की रक्षा.......... (सोचते हुए) कुँवर जी की रक्षा। अवश्य होगी....................अवश्य होगी। अब मेवाड़ का उत्तराधिकारी एक यही तो राजपूत रक्त है। दासीपुत्र बनवीर को चित्तौड़ सहन नहीं कर सकेगा।

सामली : यह तो आगे की बात है, पर तुम कुँवर जी की रक्षा किस तरह करोगी ?

पन्ना : मैं ? मैं इस अंधेरी रात में ही उसे लेकर कुंभलगढ़ भाग जाऊँगी।

सामली : और चन्दन कहाँ रहेगा ?

पन्ना : जहाँ भगवती तुलजा उसे रखेगी। मेरे महाराणा का नमक मेरे रक्त से भी महान है। नमक से रक्त बनता है, रक्त से नमक नहीं।

सामली : धन्य हो, धाय माँ। पर तुम अँधेरी रात में नहीं भाग सकोगी।

पन्ना : क्यों, अँधेरी रात में मुझे कौन जानेगा ? कौन पहचानेगा ?

सामली : तुम महलों से निकल भी न सकोगी। आते समय मैंने देखा कि बनवीर के सैनिक तुम्हारे महल को घेरने को आ रहे थे। एक ओर से तो तुम्हारा महल घिर ही चुका था।

पन्ना : हे! भगवान एकलिंग। अब क्या होगा ?

सामली : जैसे भी हो कुँवर की रक्षा तुम्हें करनी ही है।

पन्ना : मुझे सैनिकों की सहायता नहीं मिल सकती ?

सामली : सैनिक तो उसके है धाय माँ।

पन्ना : और सामन्त।

सामली : उनमें अभी इतना साहस नहीं है।

पन्ना : तब मैं स्वयं तलवार लेकर कुँवर की रक्षा करूँगी। भैरवी बनकर युद्व करूँगी। मरते–मरते मैं उसकी तलवार के टुकड़े–टुकड़े कर दूंगी। उसके और कुँवर के बीच में मेरे खून का समुद्र लहराएगा, जिसे वह इस जीवन में पार भी न कर सकेगा।

सामली : उसके साथ सैनिक भी हो सकते है, धाय माँ। युद्ध में तुम्हारे प्राण जायेंगे और कुँवर भी न बचेंगे।

पन्ना : तो फिर क्या करूँ ? सामली। घुटने टेक कर कुँवर की जीवन भिक्षा माँगूगी। बनवीर मनुष्य है। उसके मन में कुछ तो दया होगी।

सामली : राजा की हत्या करने के बाद दासी पुत्र मनुष्य है ? वह जंगली पशु से भी गया बीता है।

पन्ना : फिर मेरे कुँवर कैसे बचेंगे ? कैसे बचेंगे ? मेरे कुँवर । (सिसकी)

सामली : इसका उपाय मैं क्या बताउँ धाय माँ। मैं तो महल की एक परिचारिका हूँ मैं क्या कहूँ। पर इतना कहे जाती हूँ कि वह क्रूर और अत्याचारी बनवीर आता ही होगा। सर्प की तरह उसकी भी दो जीभें है, जो एक रक्त से नहीं बुझेंगी। उसे दूसरा रक्त भी चाहिए। और वह कुँवर का .... तुम कुछ बोल नहीं रही, धाय माँ। आँखें बंद कर क्या सोच रही हो ?

पन्ना : भगवती तुलजा का ध्यान कर रही हूँ कि वे मुझे शक्ति दे कि मैं कुँवर की रक्षा कर सकूँ।

सामली : इस समय कुँवर की रक्षा शक्ति से नहीं हो सकेगी। कोई युक्ति ही काम दे सकती है। चौंककर कौन आ रहा है ?

पन्ना : (जोर से) दरवाजे पे कौन है ? (कीरत बारी का प्रवेश)

कीरत : अन्न दाता। कीरत बारी हौं। धाय माँ के चरन लागौं।

पन्ना : कीरत। तुम हो ? आ गये ? बाहर तो कोई नहीं है।

कीरत : अन्न दाता। बाहर सिपाहियों का डेरा लग रहा है। जान नहीं पड़ता अन्नदाता की आधी रात को यह का हो रहा है ? पैड़ों में किसी का भी पैसारा नहीं हो पाता। मैं तो बारी है उससे कोई कुछ बोला नहीं।

पन्ना : तो तुम बेखटके चले आये।

कीरत : अन्नदाता मैं तो जूठी पत्तल उठाता हूँ कोई माल–मता तो मेरे पास है नहीं। टोकरी है उसमें पत्ते है। कुँवर जी ने ब्यालू कर लीं धाय माँ ? मैं जूठन पा लूँ।

पन्ना : नहीं

कीरत : कुँवर जू जुग–जुग जीएँ धाय माँ। जब से कुँवर जी बूँदी से आये हैं, तब से सगर महल में उजियार फैल गया है। राणा विक्रमादित्य जब हरभजन करेंगे तब धाय माँ, अपना चौर–छतर कुँवर जू को ही तो सोंपेगे, और जब कुँवर जू राणा होयेगें तो सगर जहान उनको बन्दगी करने आयेगा। सच जानो धाय माँ। कुँवर जू के सरूप दर्शन दाखिल है। मैं तो उनके लिए अपनी जान तक हाजिर कर सकता हूँ, (ठहरकर) धाय माँ, कुछ सोच रही है ?

पन्ना : (चौंककर) ऐं ! हाँ, मैं सोच रही हूँ (सामली से) तुम बाहर जाके देखो सिपाही कहाँ–कहाँ खड़े हैं और कितने सिपाही है ?

सामली : बहुत अच्छा । धाय माँ। मैं जाती हूँ (प्रस्थान)

पन्ना : तो कीरत। तुम कुँवर जी को बहुत प्यार करते हो।

कीरत : अन्नदाता । प्यार कहने में जबान पर कैसे आवे ? वो तो दिल की बात है । मौके पै ही देखा जाता है। और कहने को तो मै कह ही चुका हूँ कि उनके लिए अपनी जान तक हाजिर कर सकता हूँ।

पन्ना : जान तक हाजिर कर सकते हो ?

कीरत : ऐसी बातों में तीन तिर बाचा नई हरात, धाय माँ। मौके पे ही देखा जाता है।

पन्ना : तो वह मौका आ गया है, कीरत।

कीरत : मौका । कैसा मौका ?

पन्ना : कुँवर जी को बचाने का।

कीरत : कौन के सिर पैर भैरूँ बाबा की आँख चढ़ी है जो कुँवर जी का बाल भी बाँका कर सके। और कीरत के रहते ? धाय माँ!

पन्ना : नहीं कीरत, हँसी का समय नहीं है। कुँवर जी के प्राण संकट में है।

कीरत : कौन है जिसने सूरत पे घूँ उछाला है ?

पन्ना : बनवीर

कीरत : अरे, वो बनवीर जो महाराना विक्रमादित्य के दरबार में बंदर सरीखा नाचता है ?

पन्ना : बहुत बातों का समय नहीं है, कीरत। बोलो, कुँवर जी को बचाओगे ?

कीरत : तो मैं तलवार ले आऊँ।

पन्ना : तलवार का समय नहीं है। इस समय लड़ने से काम नहीं चलेगा। एक तरकीब करनी होगी।

कीरत : हुकुम दें ? अन्नदाता ।

पन्ना : भवानी तुलजा ने मेरे मन में सब उपाय सुझा दिये हैं।

कीरत : हाँ, ध्यान तो कर रही थी, आँख मूँद के तो भवानी ने कौन–सा हुकुम करा ?

पन्ना : उसे मानोगे ?

कीरत : अन्नदाता, सिर चढ़ा के मानूँगा।

पन्ना : अच्छा, तो सुनो। तुम हो बारी। तुम्हें बाहर जाने से कोई नहीं रोकेगा। तुम तो टोकरी में जूठी पत्तल उठा के जाते ही हो।

कीरत : ठीक कहती है, अन्नदाता। आते वक्त भी किसी ने नहीं रोका।

पन्ना : तो तुम कुँवर जी को टोकरी में लिटाकर उन पर गीली पत्तलें डालकर महल से बाहर निकल जाओं।

कीरत : वाह। अन्नदाता खूब सोचा। मैं ऐसे निकल जाऊँगा कि सिपाही लोग देखते ही रह जायेंगे। तो कुँवर जी कहाँ है ?

पन्ना : सो रहे है। आज भूमि पर ही सो गये। उन्हें धीरे से उठा कर अपनी टोकरी में सुला देना। वे जागने न पावें।

कीरत : अन्नदाता! उनको पता भी न चलेगा कि वे कहाँ जा रहे हैं।

पन्ना : (गहरी साँस लेकर) चित्तौड़ का राजकुमार पत्तल ओढ़ के सोयेगा, कौन जानता था।

कीरत : यह सब भाग की बात है, अन्नदाता। आज पत्तल ओढ़ के सोयेंगे, कल साल–दुसाला ओढ़ेंगे।

पन्ना : तो तुम जाओ, जल्दी करो।

कीरत : बहुत अच्छा, अन्नदाता। कुँवर जी कहाँ है ?

पन्ना : मेरे कमरे में नीचे ही सो गये हैं। तुम उन्हें उठा के तो ले जा सकोगे।

कीरत : अन्नदाता। अगर हुक्म दें तो बनवीर तक को सिर पै उठा के ले जा सकता हूँ।

पन्ना : ठीक है। तुम्हारी टोकरी तो काफी बड़ी है।

कीरत : अन्नदाता ।आपके जस ने ही तो मेरी टोकरी बड़ी कर दी है। सारी राजमहल की पत्तलें छोटी टोकरी में कैसे रखी जा सकती हैं और अन्नदाता। आज तो बनवीर के साथ बहुत सामंतो ने खाया है। मैंने भी सोचा आज बड़ी टोकरी ले चलूँ। सो वो ही लाया हूँ।

पन्ना : तो चलो, मैं तुम्हारी मदद कर दूँ।

कीरत : अन्नदाता। आप तकलीफ न उठायें। मैं सब कर लूँगा।

पन्ना : और हाँ, कुँवर जी, को लेकर तुम बेणच नदी के किनारे मिलना वहाँ जहाँ श्मशान है।

कीरत : ठीक है, अन्नदाता। वही मिलूँगा। वहाँ मुझ पै किसी भी आदमी की नजर न पड़ेगी।

पन्ना : तो जाओ, कीरत। आज तुम जैसे छोटे आदमी ने चित्तौड़ के मुकुट को सम्भाला है। एक तिनके ने राजसिंहासन को सहारा दिया है। तुम धन्य हो।

कीरत : अन्नदाता। धन्य तो आप हैं कि मुझको आपने ऐसी सेवा का काम सौंपा है। तो मैं चलूँ ?

(सामली का प्रवेश)

सामली : धाय माँ। महल चारों तरफ सिपाहियों से घिर गया। उत्तर की तरफ ही सात सिपाही है, बाकी तीनों तरफ बीस–बीस सिपाही पहरा दे रहे हैं शायद उत्तर की तरफ के सिपाही बनवीर को लेने गये हैं।

पन्ना : कोई चिन्ता की बात नहीं, सामली। तुम यहीं ठहरना, मै अभी आती हूँ।

सामली : देख के क्या करोगी ? मैं तो देख आयी हूँ कुँवर को बचाने का कोई उपाय सोचो।

पन्ना : मैं अभी आती हूँ (कीरत से) चलो कीरत।

(दोनों का प्रस्थान)

सामली : न जाने धाय माँ क्या सोच रही है ? कीरत बारी भी तब से यही बना है। क्या होगा ? हाय । बनवीर ने महाराणा को रक्त में नहला दिया। दुष्ट बनवीर! ....तुझे नर्क में भी चैन न मिलेगा। कुँवर उदयसिंह पर आँख लगाई है। भवानी । कुँवर की रक्षा करो।

(पन्ना का प्रवेश)

पन्ना : अब ठीक है। कुँवर की रक्षा हो गयी।

सामली : (प्रसन्नता से) हो गयी। कैसे ?

पन्ना : कीरत ने अपनी टोकरी में कुँवर को सुला दिया। ऊपर से पत्तले ढँक ली और उन पर पानी छिड़क दिया। वह उन्हें लेकर बेखटके महल से बाहर हो जायेगा। कोई उससे कुछ पूछेगा भी नहीं, कुँवर जी बच गये। कुँवर जी बच गये।

सामली : वाह, वाह, धाय माँ। बहुत अच्छा सोचा। सिपाही समझेंगे कि कीरत बारी जूठी पत्तलें ले जा रहा है। कोई इससे कुछ पूछेगा भी नहीं।

पन्ना : चित्तौड़ के भाग्य से ही वे बचेंगे।

सामली : जरूर बचेंगे। पर धाय माँ। यह सब तुम्हें किसने सुझाई ?

पन्ना : भवानी ने । मैंने आँख बंद कर उनका ध्यान किया। उसी समय कीरत बारी आया। उसने कहा .... मैं तो जूठी पत्तल उठाता हूँ। कोई माल–मत्ता तो मेरे पास है नहीं। टोकरी है और उसमें पत्तलें है, बस भवानी ने यही बात मुझे सुझा दी।

सामली : पर एक बात है, धाय माँ।

पन्ना : क्या ?

सामली : बनवीर यहाँ जरूर आयेंगे। वे तुम्हारे महल में कुँवर जी की खोज करेंगे। जब वे कुँवर जी को न पावेंगे और तुम से पूछेंगे तो तुम क्या उत्तर दोगी ?

पन्ना : कह दूँगी कि मैं नहीं जानती।

सामली : इससे वे नहीं मानेंगे। क्रोध में आकर अगर तलवार चला दी तो कुँवर जी तुम्हारे बिना कैसे जियेंगे ?

पन्ना : मैं अपने प्राणों की भिक्षा मागूँगी, जो चित्तौड़ की किसी नारी ने नहीं माँगी। ऐसी विचित्र भिक्षा वे अवश्य दे देंगे।

सामली : बनवीर के सिर पर खून चढ़ गया है। वह दैत्य बन गया है। कुँवर जी को न पाकर वह तुम्हें जरूर मार डालेगा।

पन्ना : मुझे उसकी चिन्ता नहीं है, सामली।

सामली : पर चिन्ता कुँवर जी की है। तुम्हारे बिना वे भी तो जीवित नहीं रहेंगे। फिर तुम्हारा बलिदान चित्तौड़ के किस काम आयेगा ? कुँवर जी को तो जीना ही चाहिए।

पन्ना : सचमुच कुँवर जी मेरे बिना नहीं जियेंगे। थोड़ी–सी बात पर ही रूठ जाते हैं। मुझे न पाकर उनका क्या हाल होगा ?

सामली : किसी तरह बनवीर को धोखा नहीं दे सकती ?

पन्ना : दे सकती हूँ।

सामली : किस तरह ?

पन्ना : कुँवर जी की शय्या पर किसी और को सुला दूँगी। वह क्रोध में अन्धा रहेगा ही। पहिचान भी न सकेगा कि यह कौन सोया है ?

सामली : तो कुँवर जी की शय्या पर किसे सुला दोगी ?

पन्ना : किसे सुला दूँगी ? (सोचकर) सामली मेरे ह्रदय पर वज्र गिर रहा है। मेरी आँखों में प्रलय का बादल घुमड़ रहा है। मेरे शरीर के एक–एक रोम पर बिजली तड़प रही है।

सामली : धाय माँ। संभल जाओ। ऐसी बात न कहो। कुँवर की शय्या पर ....।

पन्ना : सुला दूँगी। उसी को। उसी को सुला दूँगी, जो मेरी आँखों का तारा .... चन्दन को सुला दूँगी, सामली (सिसकियाँ) चन्दन को सुला दूँगी। कह दूँगी कि इसके कलेजे पर हल्की –सी चोट करना। बेचारा अभी बेचारा बालक है। भीषण प्रहार से मेरा लाल चौंक उठेगा।

सामली : धाय माँ। धाय माँ। ऐसा मत कहो .... ऐसा मत कहो। ऐसा मैं नहीं सुन सकूँगी। महल के किसी कोने में छिप रहूँगी। हाय! तुम क्या कह रही हो। ऐसा मत कहना। मैं जाती हूँ। ऐसा मैं नहीं सुन सकूँगी ....(प्रस्थान)

पन्ना : चली गई। कहती है, ऐसा मै नहीं सुन सकूँगी। जो मुझे करना है। वह सामली सुन भी न सकेगी। भवानी, तुमने मेरे ह्रदय को कैसा कर दिया ? मुझे बल दो कि मैं राजवंश की रक्षा में अपना रक्त दे सकूँ। अपने लाल को दे सकूँ। यही वीरांगना का व्रत है। यही वीरांगना की मर्यादा है। मेरा ह्रदय वज्र का बना दो। माता के ह्रदय के स्थान पर, जिससे ममता का स्रोत बन्द हो जाये। भवानी। मैं चित्तौड़ की सच्ची नारी बनूँ।

(नेपथ्य में चन्दन का स्वर) माँ! ....माँ! ....माँ!

(चन्दन का प्रवेश)

चन्दन : माँ। देखो मेरे पैर में चोट लग गई। यह रक्त निकल रहा है।

पन्ना : कहाँ रक्त निकल रहा है ? लाओ, देखूँ मेरे लाल। ओहो। अँगूठे में यह चोट कैसे लगी? कितना रक्त निकल रहा है। लाओ इसे बाँध दूँ। (अपनी साड़ी से कपड़े का टुकड़ा फाड़ती है) सीधा पैर करो। हाँ ठीक है .... इसे बाँध देती हूँ। (बाँधते हुए) यह चोट कैसे लगी, लाल।

चन्दन : मैं जैसे ही भोजन करके उठा माँ, सज्जा ने कहा कि महल के चारों तरफ सिपाही इकट्ठे हो रहे हैं। मै देखने के लिए ऊपर के झरोखे में चढ़ गया। अँधेरे में कुछ दिखाई नहीं दिया। जैसे ही मै नीचे कूदा, एक टूटा हुआ शीशा अँगूठे में चुभ गया। कोई बात नहीं है, माँ। रक्त तो निकला ही करता है। पर ये सिपाही महल के चारों तरफ क्यों इकट्ठे हो रहे हैं ?

पन्ना : आज नाच–रंग का दिन है न ? वही सब देखने के लिए आये होंगे। या फिर सोना ने उन्हें बुलाया होगा। वह नीचे नाच रही होगी।

चन्दन : माँ। सोना अच्छी लड़की नहीं है। मैं कल उससे कहूँगा माँ, कि कुँवर जी को नाच न दिखाया करे। उनका मन आखेट करने में नहीं लगता।

पन्ना : मैं भी उसे समझा दूँगी, चन्दन।

चन्दन : कुँवर जी कहाँ है माँ। आज भोजन मे भी साथ नहीं चले।

पन्ना : कहीं सो रहे होंगे।

चन्दन : तब से वे सो ही रहे है ? माँ कुँवर जी को नींद क्यों आती है ? माँ देखूँ, कहाँ सो रहे हैं ?

पन्ना : बुरा मान कर कहीं सो रहे होंगे।

चन्दन : सोना ने ही उन्हें बुरा मानना सिखला दिया, माँ। नहीं तो कुँवर जी पहले कभी बुरा नहीं मानते थे। खेल–खेल में भी बुरा नहीं मानते थे। साथ खेलते थे, साथ खाते थे। आज अकेले कुछ खाया भी नहीं गया, माँ।

पन्ना : तो चलो चन्दन। मैं तुम्हें जी भर के खिला दूँ।

चन्दन : अब कुँवर जी के साथ कल खाऊँगा, माँ। कल हम दोनों साथ बैठेंगे .... तुम प्रेम से परोस–परोस कर खिलाना। कल खूब खाऊँगा, माँ। कुँवर जी से भी ज्यादा। कहते हैं कि मैं चन्दन से ज्यादा खाता हूँ। अब कल से यह कहना भूल जायेंगे। (हँसता है) क्यों न माँ।

पन्ना : ठीक है लाल।

चन्दन : माँ। अच्छी तरह से क्यों नहीं बोलती ? और तुम्हारी आँखों ....
तुम्हारी आँखों में पानी कैसा ? माँ। ऐ................तुम्हारी आँखों ....।

पन्ना : कहाँ चन्दन । पानी कहाँ ? और तुम्हारे अँगूठे से रक्त की धारा बहे, मेरी आँखों से एक बूँद पानी भी न निकले ?

चन्दन : ओह। माँ, तुम तो बातें करने में बड़ी अच्छी हो। जब मैं बड़ा होकर बहुत सी जागीरें जीतूँगा माँ। तो मैं तुम्हारे लिए एक मन्दिर बनवाऊँगा। देवी के स्थान पर तुमको बिठलाऊँगा, और तुम्हारी पूजा करूँगा। तुम अपनी पूजा करने दोगी ?

पन्ना : तुमसे मुझे ऐसी ही आशा है, चन्दन।

चन्दन : यह मत समझना माँ कि जागीरें नहीं जीत सकता। उस जंगली खरगोश की तरह तेजी से दौड़ सकता हूँ। आसमान तक धावा बोल सकता हूँ।

पन्ना : अब बहुत बातें न करो चन्दन। रात अधिक हो रही है, सो जाओ।

(कुछ आहत होती है)

चन्दन : माँ .... माँ देखो उस दरवाजे से कौन झाँक रहा है ?

पन्ना : कीरत बारी होगा। तुम्हारा भोजन उठाने आया होगा। मैं देखती हूँ।

(उठकर देखती है)

चन्दन : कोई और हो तो मैं अपनी तलवार लाऊँ।

पन्ना : (लौटती हुई) कोई नहीं हैं। महल में किसका डर है ? लाल। तुम सो जाओ।

चन्दन : कहाँ सोऊँ। सज्जा तो अभी रसोईघर में ही होगी। मेरी शय्या ठीक न की होगी।

पन्ना : तो ....तुम कुँवर जी की शय्या पर सो जाओ। शय्या ठीक होने पर तुम्हें लिटा दूंगी।

चन्दन : और कुँवर जी बुरा मान गये तो ?

पन्ना : मै कुँवर जी को समझा दूँगी।तुम्हारे लेटने से कुँवर जी की शय्या मैली तो हो न जायगी ?

चन्दन : तुम बहुत अच्छी हो माँ। आज कुँवर जी की शय्या पर लेट कर देखूँ। अब तो मैं भी राजकुमार हो गया (एकाएक स्मरण कर) मेरी माला। राजकुमार के गले में माला होती है न। तुमने मेरी टूटी माला गूँथ दी।

पन्ना : नहीं गूँथ पाई लाल। सामली आ गई थी।

चन्दन : कल गूँथ देना, भूलना नहीं, माँ (शय्या पर लेटता है) आह! माँ! कितनी नरम शय्या है। जी होता है, सदा इसी पर सोता रहूँ।

पन्ना : (चीख कर) चन्दन..........!

चन्दन : क्या हुआ, माँ।

पन्ना : कुछ नहीं .... कुछ नहीं ....। आज मेरा जी कुछ अच्छा नहीं है। कभी–कभी कलेजे मैं शूल–सी उठती है। तुम सो जाओ तो मैं भी सो जाऊँगी।

चन्दन : मैं किसी वैद्य के यहाँ जाऊँ माँ।

पन्ना : नहीं, किसी वैद्य के पास इसकी दवा नहीं है। यह आप से आप शान्त हो जाती है। तुम भी सो जाओ .... मैं भी कुँवर को खिलाकर जल्दी–जल्दी सो जाऊँगी।

चन्दन : अच्छा माँ। तुम्हारी आज्ञा नहीं टालूँगा। लो मै आँखें बन्द कर लेता हूँ।

पन्ना : सो जाओ। चित्तौड़ की अच्छी कहानियों को सोचते–सोचते सो जाओ। अपनी मातृभूमि में कितने बड़े–बड़े वीर हुए हैं। बप्पा रावल, जिन्हें हारित ऋषि ने दर्शन दिये, जिन्होंने मेवाड़

की नींव डाल कर विदेशों पर चढाई की और उन्हें जीता। इन्होंने ही पहले–पहल अपने आराध्य देव एकलिंग जी का मन्दिर बनवाया, राजा नरवाहन जिन्होंने अपनी अकेली शक्ति से अनेक शत्रुओं को पराजित किया। राजा हंसपाल, जिन्होंने अनेक राज्य जीतकर अपने राज्य में मिलाये; रावल सामंत सिंह जिन्होंने सोलंकी राजा उदयपाल को युद्ध में पराजित किया। रावल सामंत सिंह, रावल समर सिंह ....।

चन्दन : (चौंककर) माँ आँखें बन्द कर तुम्हारी बातें सुन रहा था, कि एक काली छाया मेरे सिर के पास आई और उसने मुझे मारने को तलवार उठाई। माँ .... वह काली छाया .... काली छाया।

पन्ना : मैं तो तुम्हारें पास बैठी हूँ लाल। यहाँ कौन–सी काली छाया आयेगी ?

चन्दन : कोई छाया नहीं आयेगी, माँ। पर न जाने क्यों नींद नहीं आ रही।

पन्ना : अच्छी बात है, मेरे लाल। मै गीत गाऊँगी। अपने लाल को सुला दूँ।

(करूण स्वर में गीत गुनगुनाती है)

उड जा रे पँखेरूआ, साँझ पड़ी।
चार पहर बाटड़ली जोही।
मेड़ता खड़ी ऐ खड़ी।
उड जा पँखेरूआ, साँझ पड़ी।
डबडब भरिया नैन दिरिघडा।
लग रयी झड़ी ऐ झड़ी।
उड़ जा रे पँखेरूआ, साँझ पड़ी।
तेरी फिकर हूँ भयी दिवानी
मुसकन घड़ी ए घड़ी। उड़ जा रे पँखेरूआ...........

(धीरे–धीरे गाना समाप्त होता है)

पन्ना : (फिर से पुकारती है) चन्दन। (चन्दन के न बोलने पर पन्ना अलग हट कर जोर–जोर से सिसकी लेती है)

पन्ना : मेरा लाल सो गया। मैंने अपने लाल को ऐसी निद्रा में सुला दिया कि अब यह न उठेगा। (सिसकियाँ लेती है) ओह ! पन्ना। तूने, अपने भोले बच्चे के साथ कपट किया है। तूने अँगारों की सेज पर अपने फूल–से लाल को सुला दिया है। तू सर्पिणी है, जो अपने ही बच्चे को खा डालती है। जान–बूझ कर अपने पुत्र की हत्या करने जा रही है। अभागिनी माँ। संसार में तेरा भी जन्म होने को था? (सिसकियाँ लेती है, फिर चन्दन को संबोधित करते हुए) लाल। तुम्हारी माला मैं नहीं गूँथ सकी। तुम्हारा जीवन अधूरा होने जा रहा है तो माला कैसी पूरी होती ?

(सिसकियाँ) आज तुम भूखे ही रह गये मेरे लाल। आज अंतिम दिन मैं तुम्हें अपने हाथों से भोजन भी न करा सकी।

तुम क्या जानो कि कल तुम और कुँवर साथ–साथ कैसे भोजन करोगे ? कहते थे ....कल तुम परोस कर खिलाना। मैं अब किसे खिलाऊँगी, चन्दन। (सिसकियाँ) तुम बड़ी–बड़ी जागीरें जीतोगे, मन्दिर बनावाओगे, देवी के स्थान पर मुझे बिठलाओगे और मेरी पूजा करोगे। मैं ऐसी देवी हूँ जो अपने भक्त को खा रही हूँ। (सिसकियाँ)

तुम्हारे अँगूठे से रक्त की धारा बही। अब हृदय से रक्त की धारा बहेगी। तो मैं कैसे रोक सकूँगी मेरे लाल। मेरे चन्दन। जाओ ये रक्त धारा अपनी मातृभूमि पर चढ़ा दो। आज मैंने भी दीपदान किया है, दीपदान आज। जीवन का दीप मैंने रक्त की धारा पर तैरा दिया है। ऐसा दीपदान भी किसी ने किया है ? एक बार तुम्हारा मुख देख लूँ। कैसा सुन्दर और भोला मुख है। (सिसकियाँ) (यकायक भड़भड़ाहट की आवाज होती है। हाथ में तलवार लिए बनवीर आता है)

बवनीर : (मद्य पीने से उसके शब्द लड़खड़ा रहे हैं) पन्ना!

पन्ना : महाराज बनवीर।

बनवीर : सारे राजपूताने में एक ही धाय माँ है, पन्ना। सबसे अच्छी। मैं ऐसी धाय माँ को प्रणाम करने आया हूँ (रूककर) ऐं, धाय माँ की आँखों में आँसू।

पन्ना : नहीं .... आँसू नहीं हैं। आज मेरे कुँवर बिना भोजन किये सो गये हैं।

बनवीर : आज के दिन भोजन नहीं किया ? अरे आज तो उत्सव का दिन है। आनन्द का दिन है। (अट्टहास करता है) मेरे महल में तीन सौ सामन्तों ने भोजन किया। आज कीरत बारी की टोकरी देखती। भोजन उठाते–उठाते वह जिन्दगी भर के लिए थक गया होगा। (हँसता है) जिन्दगी भर के लिए । तो कहाँ है कुँवर उदय सिंह। मैं उन्हें अपने हाथ से भोजन करा दूँ।

पन्ना : कुँवर सो गये हैं। वे किसी के हाथ से भोजन नहीं करते, मैं उन्हें खिला दूँगी।

बनवीर : धाय माँ हो न । आज पन्ना। आज तुमने सोना का नाच नहीं देखा। ओह। कितना अच्छा नाचती है। मैंने उससे कह दिया था कि वह कुँवर उदयसिंह को और धाय माँ को अपना नाच दिखला दे।

पन्ना : वह आई थी। शायद तुम्हीं ने उसे भेजा था, पर कुँवर का जी अच्छा नहीं था, इसीलिए मैंने उन्हें नहीं भेजा।

बनवीर : जी अच्छा नहीं था और आज का दीपदान भी तुमने नहीं देखा ?

पन्ना : मेरे दीप–दान देखने की बात नहीं है, करने की बात है।

बनवीर : ठीक है, धाय माँ तो मंगल कामनाओं की देवी है। वे दीपदान करके चित्तौड़ का कल्याण करेंगी। मैं भी चित्तौड़ का कल्याण करूँगा। एक बात कहूँ, पन्ना। मैं तुम्हें मेवाड़ की एक जागीर देना चाहता हूँ। वहाँ तुम्हारे लिए तुलजा भवानी का मन्दिर बनेगा, मन्दिर। सो लोग

तुम्हें इतनी श्रद्धा से देखेंगे कि तुलजा भवानी में और तुम में कोई अन्तर न होगा। तुम्ही देवी के उस मन्दिर में रहोगी। लोग तुम्हारी पूजा करेंगे।

पन्ना : (चीखकर) बनवीर ?

बनवीर : (अट्टहास कर) महाराज बनवीर नहीं कहा ? मेरे कहने भर से तुम देवी हो गई। महाराज बनवीर को बनवीर कहने लगी। (हँसता है) देवी को प्रणाम। देखो, अब तुम्हें मोह–ममता से दूर रहना होगा। तुम कुँवर उदयसिंह को मुझे दे दोगी और उसे मैं यह तलवार दूंगा। ?

(तलवार खींच लेते है)

पन्ना : ऐं, यह तलवार। इस पर रक्त क्यों लगा है ?

बनवीर : रक्त तो तलवार की शोभा है, पन्ना। वह अनन्त सुहाग से भरी है। यह तो उसके सिन्दूर की रेखा है। बिना रक्त के तलवार भी कभी तलवार कहला सकती है।

पन्ना : यह तलवार म्यान में रख लो महाराज।

बनवीर : क्या तुम्हें भय लगता है। चित्तौड़ में तलवार से किसी को भय नहीं लगता। धाय माँ होने पर तुममें इतनी ममता भर गई कि तलवार नहीं देख सकती ? पन्ना। तलवारें आसानी से म्यान के भीतर नहीं जातीं। जब म्यान में राज्य–श्री भर जाती है तो तलवार बाहर निकल आती है।

पन्ना : आधी रात हो चुकी है, महाराज बनवीर । विश्राम करो।

बनवीर : विश्राम मैं करूँ ? बनवीर। जिसे राजलक्ष्मी को पाने के लिए दूर तक की यात्रा करनी है। मैं अपने साथ कुँवर उदयसिंह को भी ले जाना चाहता हूँ।

पन्ना : यह नहीं होगा, यह नहीं होगा, महाराज बनवीर।

बनवीर : जागीर नहीं चाहती ?

पन्ना : नहीं

बनवीर : तो उदयसिंह के बदले जो माँगो वो दिया जाएगा।

पन्ना : राजपूतनी व्यापार नहीं करती महाराज! वह तो रणभूमि में चढ़ती है या फिर चिता पर।

बनवीर : तुम्हारा महल सैनिकों से घिरा है।

पन्ना : सैनिकों को किसने आज्ञा दी ? महाराज विक्रमादित्य........................

बनवीर : (बीच ही में) वे अब इस संसार में नहीं है पन्ना। उन्होंने रक्त की नदी पार कर ली है। उसी रक्त की लहर मेरी तलवार पर है।

पन्ना : ओह! बनवीर, हत्यारा बनवीर।

बनवीर : महाराणा बनवीर को हत्यारा बनवीर नहीं कह सकती, पन्ना! हत्यारा बनवीर कहने वाली जीभ काट ली जायेगी।

पन्ना : तो लो मेरी जीभ काट लो, और यहाँ से चले जाओ। महाराज विक्रमादित्य ....

बनवीर : बार–बार विक्रमादित्य का नाम क्या लेती है ? प्रेतों और पिशाचों को वह नाम लेने दो। यदि मेरा नाम लेना है तो जयकार के साथ नाम लो।

पन्ना : धिक्कार है, बनवीर, तुम्हारी माँ ने तुम्हें जन्म देते ही क्यों न मार डाला।

बनवीर : चुप रह धाय। बच्चे की पालनेवाली, लोरियाँ सुनाने वाली एक साधारण दासी महाराणा से बात करती है ? कहाँ है उदयसिंह ?

पन्ना : तू उदयसिंह को छू भी नहीं सकता। नीच, नारकी। महाराणा विक्रमादित्य की हत्या के बाद तू उदयसिंह को देख भी नहीं सकता।

बनवीर : मैं नहीं देखूँगा, मेरी तलवार देखेगी। विक्रम के रक्त से सनी हुई तलवार अब उदयसिंह के रक्त से धोई जायेगी।

पन्ना : ओह क्रूर बनवीर। तुम तो उदयसिंह के संरक्षक थे। रक्षा के बदले क्या तुम उसकी हत्या करोगे ? नहीं–नहीं, यह नहीं हो सकता, यह नहीं हो सकता। महाराणा बनवीर। तुम राज करो चित्तौड़ पर, मेवाड़ पर, सारे राजपूताने पर राज करो। पर कुँवर उदयसिंह को छोड़ दो। मैं उसे लेकर संन्यासिन हो जाऊँगी। तीर्थों में वास करूँगी। तुम्हारा मुकुट तुम्हारे माथे पर रहे, पर मेरा कुँवर भी मेरी गोद में रहे। बनवीर! महाराणा बनवीर, मुझे यह भिक्षा दे दो।

बनवीर : दूर हट दासी। यह नाटक बहुत देख चुका हूँ। उदयसिंह की हत्या ही तो मेरे राजसिंहासन की सीढ़ी है। जब तक वह जीवित है तब तक सिंहासन मेरा नहीं होगा। तू मेरे सामने से हट जा।

पन्ना : मैं नहीं हटूँगी। अपने कुँवर की शय्या से दूर नहीं हटूँगी।

बनवीर : उदयसिंह को सुला दिया है, जिससे उसे मरने का कष्ट न हो। उसका मुख भी ढ़ँक दिया है। वाह री धाय माँ। बालक के मरने में भी ममता का ध्यान रखती है (तीव्रता से) शय्या से दूर हट पन्ना। मैं उसे चिर निद्रा में सुला दूँ।

पन्ना : (साहस से) नहीं, ऐसा नहीं होगा, क्रूर नराधम, नारकी। ले मेरी कटार का प्रसाद ले, (आक्रमण करती है, उसकी चोट बनवीर की ढाल पर सुन पड़ती है।)

बनवीर : (क्रूर अट्‌टहास करता है) ह ह ह ह । दासी कर लिया कटार का वार। यह कटार मेरे हाथ में है, अब किससे वार करेगी ? अब तुझे भी समाप्त कर दूँ ? लेकिन स्त्री पर हाथ नहीं उठाऊँगा।

पन्ना : अबोध सोते हुए बालक पर हाथ उठाते हुए तेरा हृदय तुझे नहीं धिक्कारता ?

बनवीर : (शय्या के समीप जाकर) यही है, मेरे मार्ग का कंटक। आज मेरे नगर में स्त्रियों ने दीपदान किया है, मैं भी यमराज को इस दीप का दान करूँगा। यमराज! लो इस दीपक को। यह मेरा दीपदान है।

(तलवार से उदयसिंह के धोखे में चन्दन पर जोर से प्रहार करता है। पन्ना जोर से चीख कर मूर्च्छित हो जाती है। कमरे में मन्द लौ का दीपक जलता है।)